# जलसंरक्षण : भविष्य में निर्भरता और चुनौती

संजय गोस्वामी
मुंबई

इस समय पानी के महत्व को जानने का दिन और जल संरक्षण के विषय में समय रहते सचेत होने का दिन है। आंकड़े बताते हैं कि विश्व के 1.6 अरब लोगों को पीने का शुद्ध पानी नहीं मिल रहा है। पानी की इसी जंग को खत्म करने और इस के प्रभाव को कम करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 1992 के अपने अधिवेशन में 22 मार्च को ''विश्व जल दिवस'' के रुप में मनाने का निश्चय किया। ''विश्व जल दिवस'' की अंतरराष्ट्रीय पहल रियो–डि–जेनेरियो में 1992 में आयोजित पर्यावरण तथा विकास का संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में की गई। जिस पर सर्वप्रथम 1993 को पहली बार 22 मार्च के दिन पूरे विश्व में जल दिवस के मौके पर जल के संरक्षण और रख–रखाव पर जागरुकता फैलाने का कार्य किया गया। पिछले दिनों संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि विश्व के अनेक हिस्सों में पानी की भारी समस्या है और इसकी बर्बादी नहीं रोकी गई तो स्थिति और विकराल हो जाएगी क्योंकि भोजन की मांग और जलवायु परिवर्तन की समस्या दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। प्रकृति जीवनदायी संपदा जल में एक चक्र के रूप में प्रदान करती है, हम भी इस चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। चक्र को गतिमान रखना हमारी जिम्मेदारी है, चक्र के थमने का अर्थ है, हमारे जीवन का थम जाना। प्रकृति के खजाने से हम जितना पानी लेते हैं, उसे वापस भी हमें ही लौटाना है। हम स्वयं पानी का निर्माण नहीं कर सकते अतः प्राकृतिक संसाधनों को दूषित न होने दें और पानी को व्यर्थ न गवाएं यह प्रण लेना आज के दिन बहुत आवश्यक है। धरातल पर तीन चौथाई पानी होने के बाद भी पीने योग्य पानी एक सीमित मात्रा में ही है। उस सीमित मात्रा के पानी का इंसान ने अंधा–धुंध दोहन किया है। नदी, तालाबों और झरनों को पहले ही हम कैमिकल की भेंट चढ़ा चुके हैं, जो बचा–कुचा है उसे अब हम अपनी अमानत समझकर अंधा–धुंध खर्च कर रहे हैं। संसार इस समय जहां अधिक टिकाऊ भविष्य के निर्माण में व्यस्त हैं वहीं पानी, खाद्य तथा ऊर्जा की पारस्परिक निर्भरता की चुनौतियों का सामना हमें करना पड़ रहा है। जल के बिना न तो हमारी प्रतिष्ठा बनती है और न गरीबी से हम छुटकारा पा सकते हैं। फिर भी शुद्ध पानी तक पहुंच और सैनिटेशन यानी साफ–सफाई, संबंधी सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य तक पहुंचने में बहुतेरे देश अभी पीछे हैं। एक पीढ़ी से कुछ अधिक समय में दुनिया की आबादी के 60 प्रतिशत लोग कस्बों और शहरों में रहने लगेंगे और इसमें सबसे अधिक बढ़ोतरी विकासशील देशों में शहरों के अंदर उभरी मलिन बस्तियों तथा झोपड़–पट्टियों के रूप में होगी। भारत में शहरीकरण के कारण अधिक सक्षम जल प्रबंधन तथा उन्नत पेय जल और सैनिटेशन की जरूरत पड़ेगी। क्योंकि शहरों में अक्सर समस्याएं विकराल रूप धारण कर लेती हैं और इस समय तो समस्याओं का हल निकालने में हमारी क्षमताएं बहुत कमजोर पड़ रही हैं। जिन लोगों के घरों या नजदीक के किसी स्थान में पानी का नल उपलब्ध नहीं है ऐसे शहरी बाशिंदों की संख्या विश्व परिद्रश्य में पिछले दस वर्षों के दौरान लगभग ग्यारह करोड़ चालीस लाख तक पहुंच गई है, और साफ–सफाई की सुविधाओं से वंचित लोगों की तादाद तेरह करोड़ 40 लाख बतायी जाती है। बीस प्रतिशत की इस बढ़ोतरी का हानिकारक असर लोगों के स्वास्थ्य और आर्थिक उत्पादकता पर पड़ा हैः लोग बीमार होने के कारण काम नहीं कर सकते है। भारत में विश्व की लगभग 16 प्रतिशत आबादी निवास करती है। लेकिन, उसके लिए मात्र 4 प्रतिशत पानी ही उपलब्ध है। विकास के शुरुआती चरण में पानी का अधिकतर इस्तेमाल सिंचाई के लिए होता था। लेकिन, समय के साथ स्थिति बदलती गयी और पानी के नए

क्षेत्र–औद्योगिक व घरेलू–महत्वपूर्ण होते गये। भारत में जल संबंधी मौजूदा समस्याओं से निपटने में वर्षा जल को भी एक सशक्त साधन समझा जाए। पानी के गंभीर संकट को देखते हुए पानी की उत्पादकता बढ़ाने की जरूरत है। चूंकि एक टन अनाज उत्पादन में 1000 टन पानी की जरूरत होती है और पानी का 70 फीसदी हिस्सा सिंचाई में खर्च होता है, इसलिए पानी की उत्पादकता बढ़ाने के लिए जरूरी है कि सिंचाई का कौशल बढ़ाया जाए। यानी कम पानी से अधिकाधिक सिंचाई की जाए। अभी होता यह है कि बांधों से नहरों के माध्यम से पानी छोड़ा जाता है, जो किसानों के खेतों तक पहुंचता है। जल परियोजनाओं के आंकड़े बताते हैं कि छोड़ा गया पानी शत–प्रतिशत खेतों तक नहीं पहुंचता। कुछ पानी रास्ते में भाप बन कर उड़ जाता है, कुछ जमीन में रिस जाता है और कुछ बर्बाद हो जाता है। पानी का महत्व भारत के लिए कितना है यह हम इसी बात से जान सकते हैं कि हमारी भाषा में पानी के कितने अधिक मुहावरे हैं। अगर हम इसी तरह कथित विकास के कारण अपने जल संसाधनों को नष्ट करते रहें तो वह दिन दूर नहीं, जब सारा पानी हमारी आंखों के सामने से बह जाएगा और हम कुछ नहीं कर पाएंगे। बर्बादी का एक बड़ा कारण यह है कि पानी बहुत सस्ता और आसानी से सुलभ है। कई देशों में सरकारी सब्सिडी के कारण पानी की कीमत बेहद कम है। इससे लोगों को लगता है कि पानी बहुतायत में उपलब्ध है, जबकि हकीकत उलटी है।

संयुक्त राष्ट्र ने चेतावनी दी है कि पानी की बर्बादी को जल्द ही नहीं रोका गया तो पूरी दुनिया गंभीर जलसंकट का सामना करेगी। जलवायु परिवर्तन और भोजन की बढ़ती मांग से यह समस्या और विकराल होती जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र की इस रिपोर्ट में बताया गया है कि वर्ष 2050 तक पृथ्वी पर जनसंख्या मौजूदा सात अरब से बढ़कर नौ अरब हो जाएगी। बिना बेहतर योजना व संयोजन के लाखों लोगों को भुखमरी और ऊर्जा की कमी से जूझना पड़ेगा। कृषि की बढ़ती जरूरतों, खाद्यान्न उत्पादन, ऊर्जा उपभोग, प्रदूषण और जल प्रबंधन की कमजोरियों की वजह से स्वच्छ जल पर दबाव बढ़ेगा। जल श्रृंखला की यह चौथी रिपोर्ट है जिसमें कहा गया है कि आबादी में वृद्धि और मांसाहार की बढ़ती प्रवृत्ति से 2050 तक करीब 70 फीसदी लोगों को खाद्यान्न की जरूरत होगी। वर्तमान पद्धति के इस्तेमाल से वैश्विक कृषि जल खपत में 20 फीसदी की वृद्धि होगी। आज कृषि में करीब 70 फीसदी जल का उपयोग होता है यह अमीर देशों में 44 फीसदी और अल्प विकसित देशों में 90 फीसदी से अधिक है। दुनिया में 2.50 अरब लोग गंदगी में रहने के लिए मजबूर है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार पानी के लिए शहरों, गांवों के लोगों और देशों में भारी लड़ाई छिड़ी हुई है। इसे खत्म करना होगा। विश्व में 148 देश ऐसे है जिनके बीच अंतर्राष्ट्रीय जल संग्रहण क्षेत्र है। 21 देश तो इन्हीं क्षेत्रों में मौजूद है संयुक्त राष्ट्र के अनुसार यूरोप और उत्तरी अमेरिका में पानी की समस्या मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन की वजह से उत्पन्न हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक 2070 तक चार करोड़ 40 लाख यूरोपीय नागरिकों को पानी की किल्लत होगी। एशिया प्रशांत में अभी भी 1.90 अरब लोग साफ–सफाई से कोसों दूर हैं। उद्योग और घरों से होने वाला प्रदूषण एक मुख्य कारक है। जलवायु परिवर्तन की वजह से अगले कुछ सालों में भंयकर सूखे और बाढ़ की आशंका व्यक्त की गई है। लेटिन अमेरिका ओर कैरेबियन देशों में गरीब और ग्रामीण इलाका होने के बावजूद साफ–सफाई और पानी की समुचित व्यवस्था की वजह से इसे सराहा गया है।